पश्चाताप - 3

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ क्या समझते हो- क्या अन्त तक साधारण रुप ही रहेगा वा यह झलक चेहरों से दिखाई देगा? वा सिर्फ लास्ट टाइम जैसे पर्दे के अन्दर तैयार हो फिर पर्दा खुलता है और सीन सामने आकर समाप्त हो जाती है, ऐसे होगा? कुछ समय यह झलक दिखाई देगी।

➳ _ ➳ कई ऐसे समझते हैं कि जब फस्ट, सेकेण्ड आत्मायें जो निमित बनी वही साधारण गुप्त रुप अपना साकार रुप का पार्ट समाप्त कर चले गये तो हम लोग की झलक फिर क्या दिखाई देगी?

➳ _ ➳ लेकिन नहीं। 'सन शोज फादर" गाया हुआ है। तो फादर का शो बच्चे प्रैक्टिकल में लाने से ही करेंगे।

➳ _ ➳ 'अहो प्रभु' की पुकार जो आत्माओं की निकलेगी वा पश्चाताप की लहर जो आत्माओं में आयेगी वह कब, कैसे आयेगी?

➳ _ ➳ जिन्होंने साकार में अनुभव ही नहीं किया उन्हों को भी बाप के परिचय से कि हम बाबा के बच्चे हैं। यह तब मानेंगे कि बरोबर **बाप आये लेकिन हम लोगों ने कुछ नहीं पाया?**

➳ _ ➳ तो यह प्रैक्टिकल रुहानी झलक और फरिश्तेपन की फलक चेहरे से, चलन से दिखाई दे।

➢➢ REPENTANCE - ब्राह्मण आत्माएं किस किस बात के लिए पश्चाताप करेंगी ?

➳ _ ➳ R = REMEMBERENCE

→ जितना याद को बड़ा सकते थे... नहीं बढाया

→ **मन का बंधन ही याद नहीं करने देता... और कोई बंधन नहीं**

→ अगर कोई 24 घंटे भी सेवा करता हो तो वो यह नहीं कह सकता की मेरे पास याद करने का टाइम नहीं है

➳ _ ➳ E = SPIRITUAL ENJOYMENT (रूहानी मौज)

→ मौज बहुत ऊंची अवस्था है

→ **लम्बे काल तक श्रीमत पर चलने वाला ही इस अवस्था का अनुभव कर सकता है**

→ बार बार श्रीमत का उल्लंघन करने वाले इस अवस्था के आस पास भी नहीं आ सकता

→ **बार बार COMPLAINTS की बजाये आभार की अवस्था**

➳ _ ➳ P = PURITY

→ ब्रह्मचर्य का जितना तेज़ स्वयं में भरना चाहिए था ... उतना नहीं भरा

→ **वासना का पश्चाताप**

→ शनिक सुख इन्द्रियों को चलचल बना रहा था

➳ _ ➳ E = EMPOWERMENT

→ खुद को जितना शक्तिशाली बनाना चाहिए था... उतना नहीं बनाया

➳ _ ➳ N = NEWNESS

→ मुरली सुनने, पड़ने, लिखने, चिंतन में नवीनता

→ योग में नवीनता

→ **बिना नवीनता के बुधी में निखार नहीं आएगा**

➳ _ ➳ T = TYAAG AUR TAPASYA

→ **महान तपस्वी बन सकते थे ...** अपनी किरणों से संसार को पवित्र बनाने में अपना बहुत बड़ा योगदान दे सकते थे ... लेकिन नहीं कर पाए

→ **सेवाओं के घने जंगल में भटक गए...**

➳ _ ➳ A = AATAM ABHIMANI

→ जितना **देह का मालिक अवस्था** का अनुभव करना चाहिए था, नहीं किया ...

→ अपितु देह का गुलाम बनकर रही

➳ _ ➳ N = NEARNESS TO GOD

→ जितना बाप के समीप रहना चहिये था, उतना नहीं रहे.. जबकि **भगवान की तरफ से खुला ऑफर था :- USE ME**

→ तुम परमात्मा की तरफ एक कदम बढाओ, वह हज़ार कदम तुम्हारी तरफ बढायेगा

→ वह हमारे साथ साथ चल रहा है... यह अनुभव नहीं किया

➳ _ ➳ C = CHURNING

→ ज्ञान मंथन कर ज्ञान को धारण ही नहीं किया

➳ _ ➳ E = EXCELLENCE (श्रेष्ठता)

→ ज्ञान, योग, धारणा, सेवा में श्रेष्ठता